आकारसदृशः प्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः ।

आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः ।।15।।

अन्वय आकारसदृशः प्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः, आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः (स आसीत्)

अनुवाद जैसा उनका आकार (विशाल शरीर) था वैसी ही उनकी बुद्धि (कुशाग्र) थी, जैसी उनकी (तीक्ष्ण) बुद्धि थी वैसा ही उन्हें शास्त्रों का (गहन) ज्ञान था, जैसा (गम्भीर) उनका शास्त्रज्ञान था वैसे ही (महान्) उनका उद्यम था और जैसे उनके (महान्) उद्यम (कर्म) थे वैसे ही उन्हें सफलता मिलती थी।

टिप्पणियां

आकारसदृशः प्रज्ञः शरीर में ब्रह्मा रूप, बाह्य आकृति। उन्नत शरीरानुकूल दिव्य बुद्धि (ज्ञान)।

सदृशः अनुरुप। जैसा आकार था उसके अनुरूप ही उसकी बुद्धि थी। आकारेण सदृशी प्रज्ञा यस्य सः (बहुव्रीहि)।

आगमः आ उपसर्ग धातु गम् अप् - वेद एवं तदनुकूल शास्त्रों का अध्ययन, ज्ञान, विद्या।

आरम्भः-आ उपसर्ग . धातु रभ्घञ् प्रयत्न, उद्योग, कर्म। उसके ज्ञान (आगम) के समान ही उसकी योजनाएं तथा कार्य महान् थे। प्राप्त शास्त्रीय विद्याओं के अनुरुप ही उनका आरम्भ था।

उदयः उत् उपसर्ग धातु इ अय् - सफलता, सिद्धि। उसकी योजनाओं के अनुसार ही उसकी सिद्धि थी।